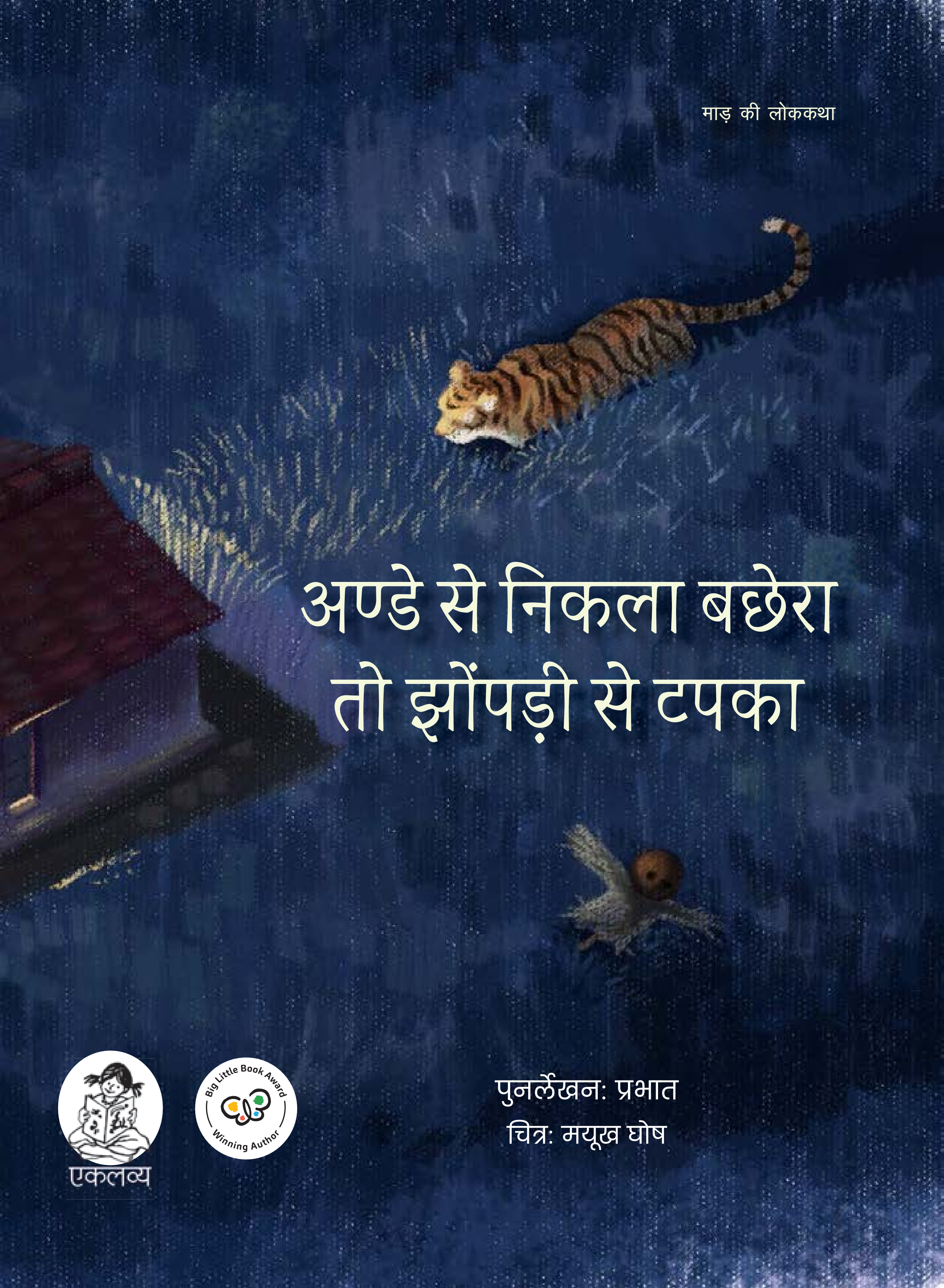

माड़ की लोककथा

अण्डे से निकला बछेरा तो झोंपड़ी से टपका

पुनर्लेखन: प्रभात

चित्र: मयूख घोष

एकलव्य

Big Little Book Award Winning Author

अण्डे से निकला बछेरा तो झोंपड़ी से टपका

पुनर्लेखन: प्रभात

चित्र: मयूख घोष

एकलव्य

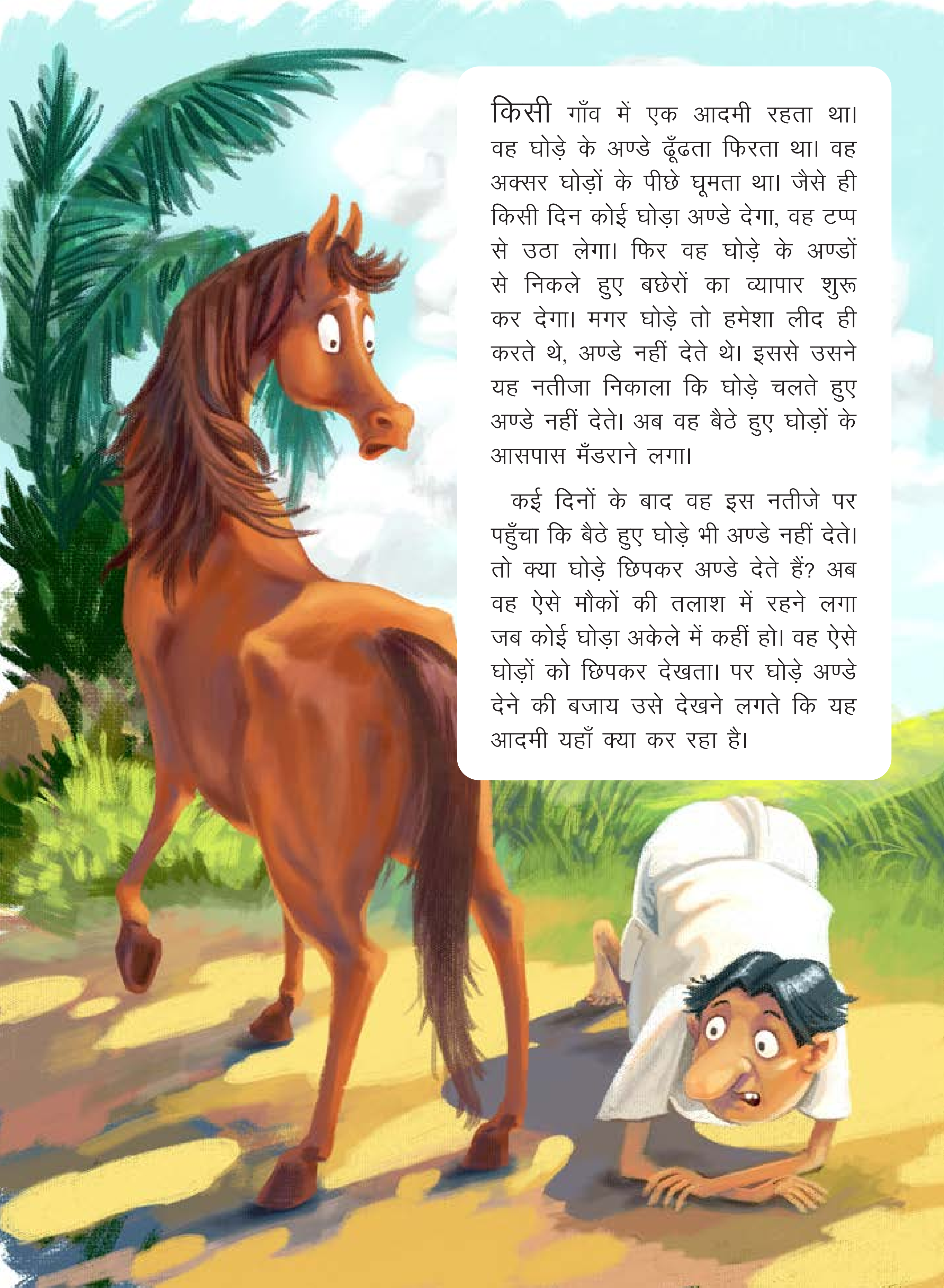

किसी गाँव में एक आदमी रहता था। वह घोड़े के अण्डे ढूँढता फिरता था। वह अक्सर घोड़ों के पीछे घूमता था। जैसे ही किसी दिन कोई घोड़ा अण्डे देगा, वह टप्प से उठा लेगा। फिर वह घोड़े के अण्डों से निकले हुए बछेरों का व्यापार शुरू कर देगा। मगर घोड़े तो हमेशा लीद ही करते थे, अण्डे नहीं देते थे। इससे उसने यह नतीजा निकाला कि घोड़े चलते हुए अण्डे नहीं देते। अब वह बैठे हुए घोड़ों के आसपास मँडराने लगा।

कई दिनों के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा कि बैठे हुए घोड़े भी अण्डे नहीं देते। तो क्या घोड़े छिपकर अण्डे देते हैं? अब वह ऐसे मौकों की तलाश में रहने लगा जब कोई घोड़ा अकेले में कहीं हो। वह ऐसे घोड़ों को छिपकर देखता। पर घोड़े अण्डे देने की बजाय उसे देखने लगते कि यह आदमी यहाँ क्या कर रहा है।

उसकी मुश्किल बढ़ती ही जा रही थी और कारोबार शुरू होने में देरी पर देरी हो रही थी। उसने अनेक बार खेतों में, झाड़ियों में, नदी किनारे, पेड़ों पर दूसरे प्राणियों के अण्डे देखे थे। सो अब वह घोड़ों का पीछा करने की बजाय ऐसी जगहों पर जाने लगा। झाड़ियों को हटा-हटाकर देखता। घासों में देखता कि कहीं घोड़े का कोई अण्डा पड़ा हो।

एक दिन किसी ने उसे सलाह दी, “क्यों परेशान होते हो, बाज़ार से ले आओ घोड़े का अण्डा।” उसने अपना सिर पीट लिया कि यह बात उसके दिमाग में पहले क्यों नहीं आई। बिना एक पल गँवाए वह पास के शहर की ओर चल दिया।

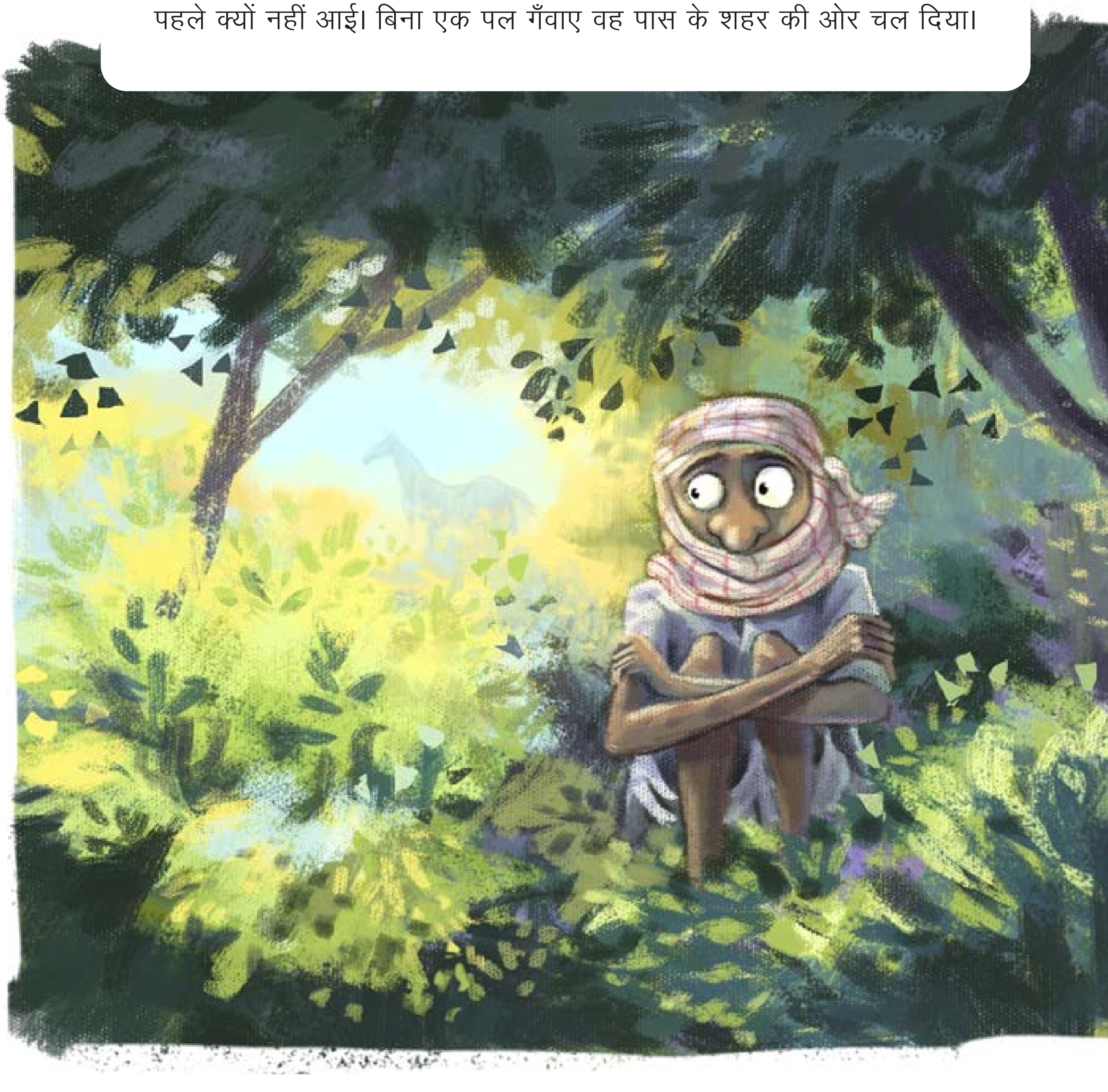

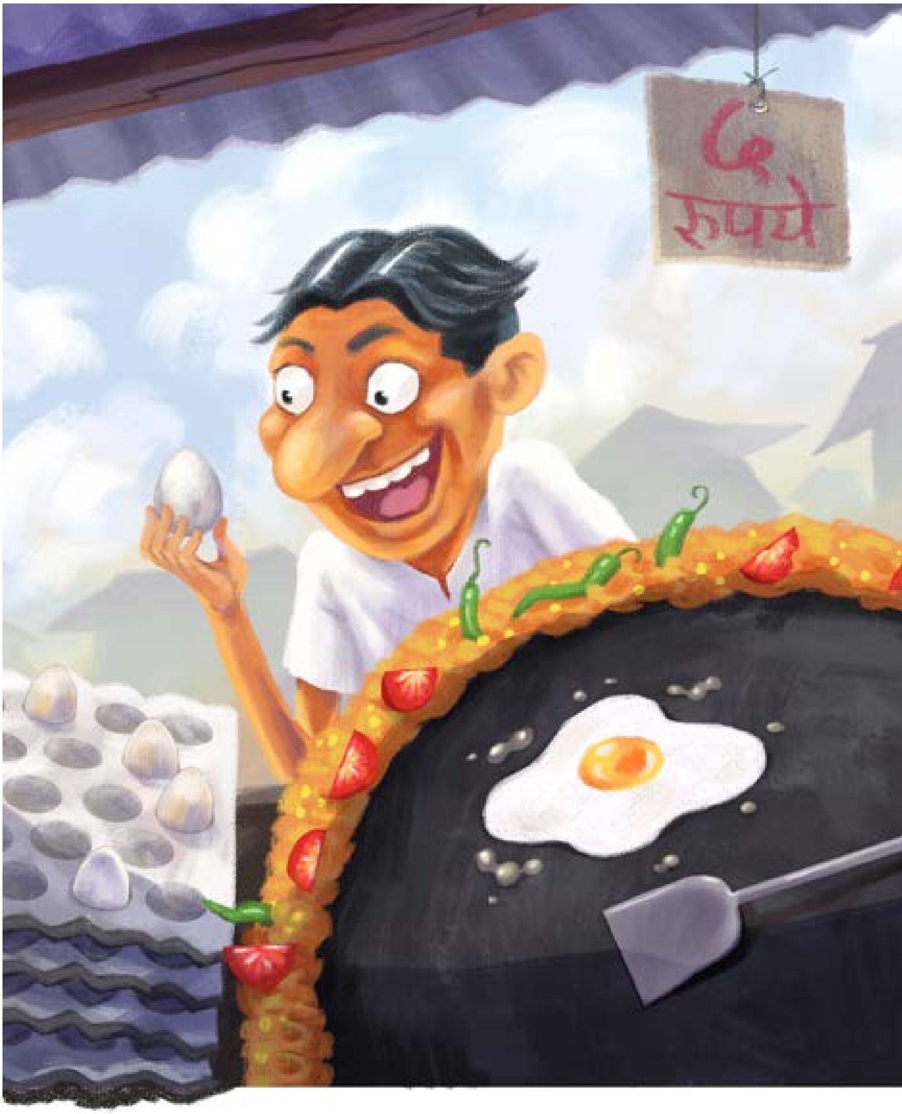

बाज़ार में ज़बरदस्त गहमागहमी थी। घुसते ही चमचमाते बरतनों की दुकान थी। उसने पूछा, “भाईसाहब घोड़े के अण्डे मिलेंगे?” दुकानदार बरतन बेचने में व्यस्त था। उसने कहा, “आगे मिलेंगे।” वह आगे बढ़ गया। आगे कपड़े की दुकान थी। कपड़ेवाला बोला, “आगे-आगे।” उसके मन में उम्मीद जागी कि आगे ही सही, मिल तो जाएँगे कम से कम। वह कुछ तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। आगे एक आदमी आमलेट बना रहा था। वहाँ अण्डे भी रखे थे। उसने आमलेटवाले से पूछा, “घोड़े के अण्डे हैं?”

“नहीं, मगरमच्छ के हैं।” कहकर आमलेटवाला हँसने लगा।

घूमते हुए वह आदमी सब्ज़ी मण्डी पहुँचा। वहाँ जिससे भी वह पूछता वही उस पर हँसता। आगे एक दुकान पर कद्दुओं का अम्बार लगा था। उसने पूछा, "घोड़े के अण्डे हैं क्या?"

"तो क्या ये आपको हाथी के अण्डे दिख रहे हैं? घोड़े के ही हैं, ले जाओ। कितने दूँ?"

"कितने दूँ से क्या मतलब? क्या आप खुद ही ये अण्डे देते हैं?"

"मैं अण्डे नहीं देता। ये जो ढेर है इसी में से दूँगा।"

"अच्छा-अच्छा। मुझे एक अण्डा दे दो।"

"निकालो पचास रुपए।"

उसने पचास रुपए दे दिए। दुकानवाले ने उसे एक कद्दू पकड़ा दिया। “काफी भारी है”, कहते हुए वह उसे कन्धे पर रखकर लगभग नाचते-भागते हुए चल पड़ा।

गाँव में पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई। घर पहुँचकर उसने आँगन में ही अण्डे को रख दिया और खाट पर लेटकर सुस्ताने लगा। झुटपुटा-सा अँधेरा होने लगा। ऐसे समय में जंगल के छोटे-मोटे जानवर अपनी माँदों से निकलकर बाहर विचरने लगते हैं। तभी कहीं से घूमती हुई एक लोमड़ी उधर आ गई। वह आँगन में रखे कद्दू को सूँघने लगी। कद्दू हिलकर लुढ़कने लगा। अचानक उस आदमी का ध्यान वहाँ गया और वह उछल पड़ा। उसके उछलते ही लोमड़ी वहाँ से सरपट भागी। उस आदमी को लगा कि बछेरा अण्डे से निकलकर भाग गया है।

उसने तुरन्त एक टॉर्च और रस्सी उठाई, और बछेरे को पकड़ने के लिए घर से निकल गया। अँधेरे का झुटपुटा अब रात में बदल चुका था। आकाश में तारे छा गए थे और दूधिया चाँद भी।

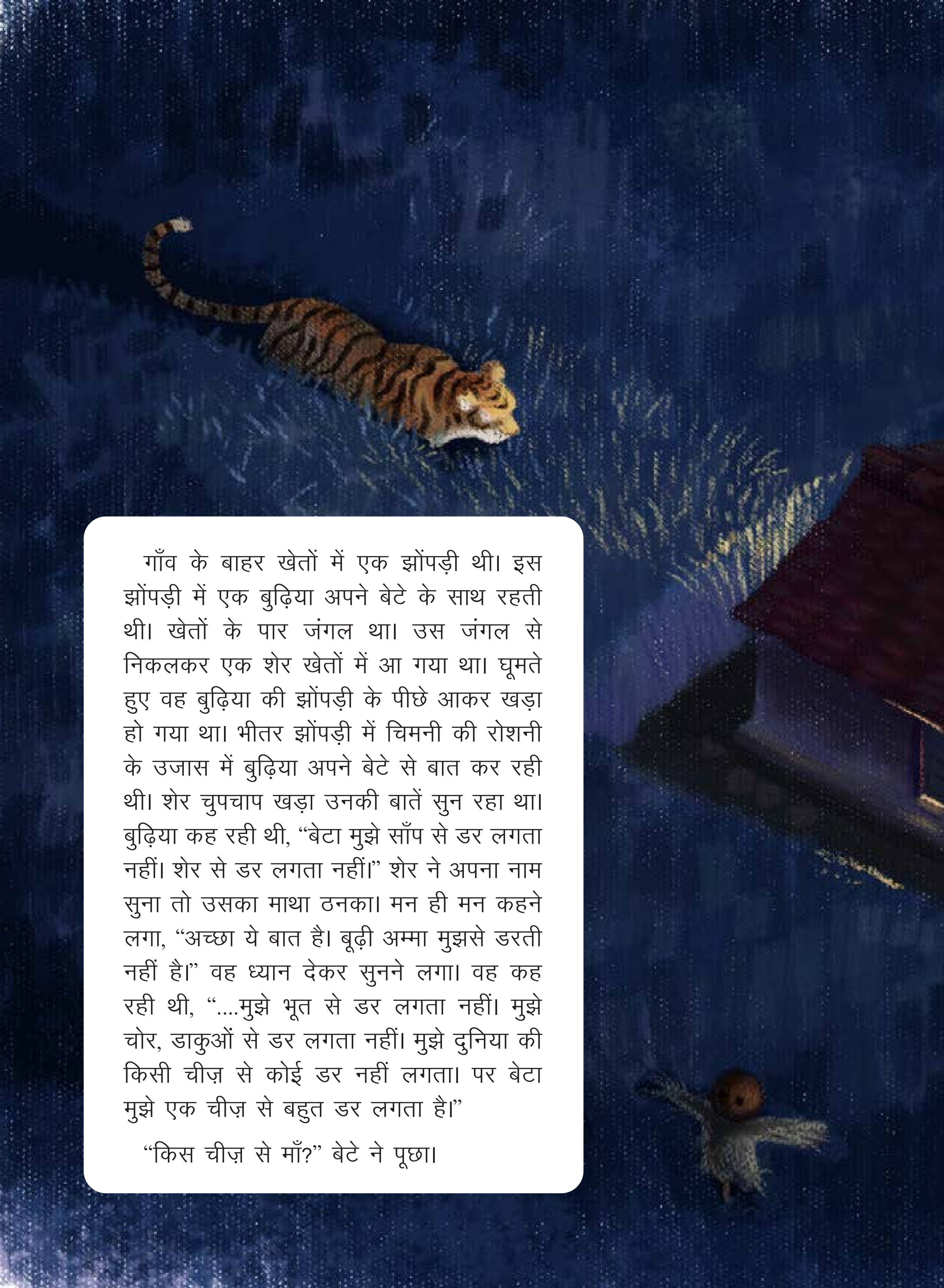

गाँव के बाहर खेतों में एक झोंपड़ी थी। इस झोंपड़ी में एक बुढ़िया अपने बेटे के साथ रहती थी। खेतों के पार जंगल था। उस जंगल से निकलकर एक शेर खेतों में आ गया था। घूमते हुए वह बुढ़िया की झोंपड़ी के पीछे आकर खड़ा हो गया था। भीतर झोंपड़ी में चिमनी की रोशनी के उजास में बुढ़िया अपने बेटे से बात कर रही थी। शेर चुपचाप खड़ा उनकी बातें सुन रहा था। बुढ़िया कह रही थी, “बेटा मुझे साँप से डर लगता नहीं। शेर से डर लगता नहीं।” शेर ने अपना नाम सुना तो उसका माथा ठनका। मन ही मन कहने लगा, “अच्छा ये बात है। बूढ़ी अम्मा मुझसे डरती नहीं है।” वह ध्यान देकर सुनने लगा। वह कह रही थी, “....मुझे भूत से डर लगता नहीं। मुझे चोर, डाकुओं से डर लगता नहीं। मुझे दुनिया की किसी चीज़ से कोई डर नहीं लगता। पर बेटा मुझे एक चीज़ से बहुत डर लगता है।”

“किस चीज़ से माँ?” बेटे ने पूछा।

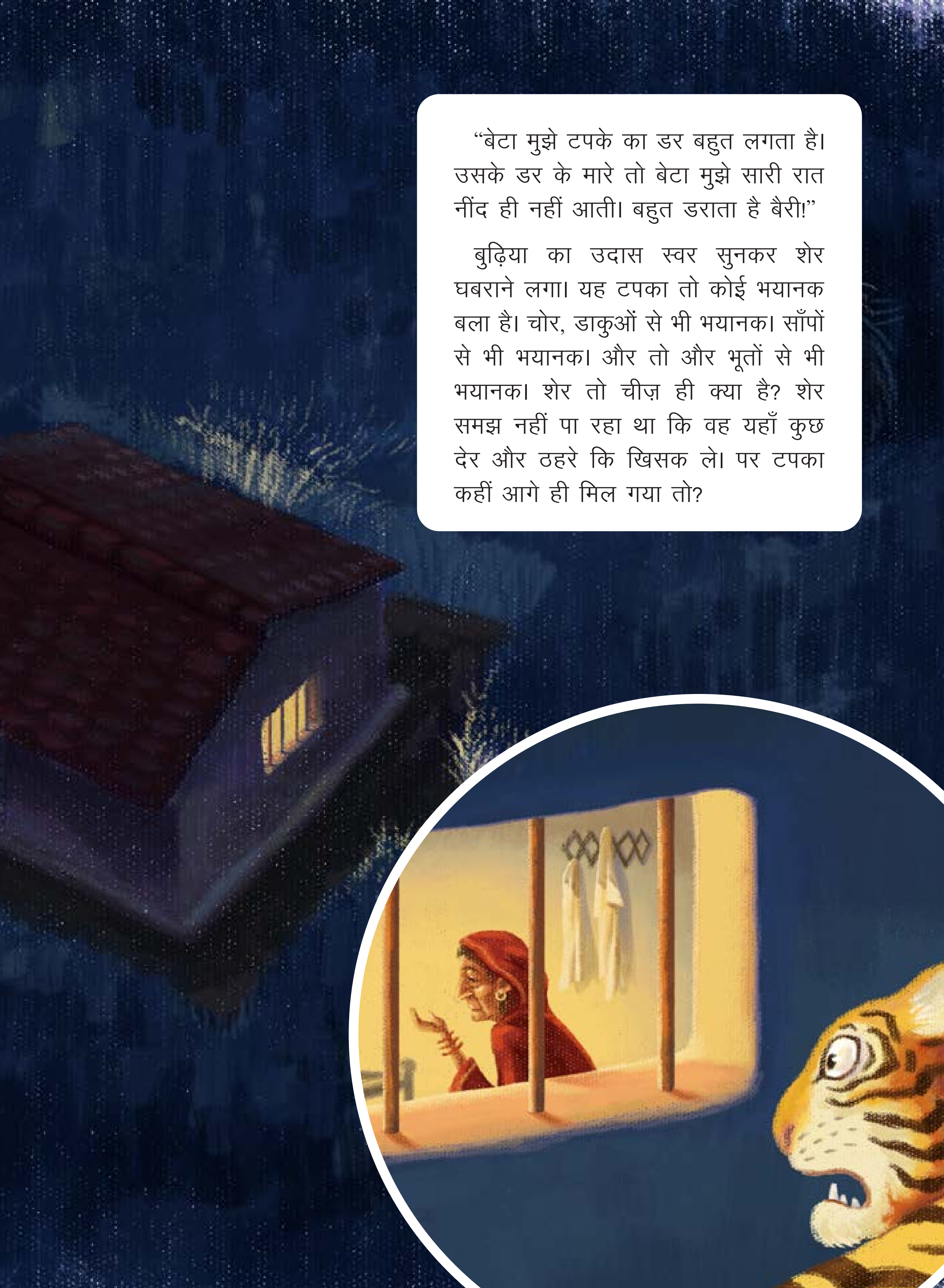

"बेटा मुझे टपके का डर बहुत लगता है। उसके डर के मारे तो बेटा मुझे सारी रात नींद ही नहीं आती। बहुत डराता है बैरी!"

बुढ़िया का उदास स्वर सुनकर शेर घबराने लगा। यह टपका तो कोई भयानक बला है। चोर, डाकुओं से भी भयानक। साँपों से भी भयानक। और तो और भूतों से भी भयानक। शेर तो चीज़ ही क्या है? शेर समझ नहीं पा रहा था कि वह यहाँ कुछ देर और ठहरे कि खिसक ले। पर टपका कहीं आगे ही मिल गया तो?

इतने में ही वह आदमी अपने बछेरे को ढूँढता हुआ बुढ़िया की झोंपड़ी की तरफ आया। अण्डे से निकला बछेरा नहीं मिला तो उसके कारोबार का क्या होगा, इस चिन्ता में उसके पाँव ज़मीन पर सीधे न पड़ते थे। टॉर्च का चिलका देता किधर था और पड़ता किधर। टॉर्च को थामे हुए हाथ इधर का उधर झूल जाता था। दूसरे हाथ में पकड़ी रस्सी लटककर पाँवों में उलझ जाती। इस चक्कर में वह एक-दो बार ज़मीन पर गिर भी पड़ा था। एकाएक उसकी टॉर्च का चिलका झोंपड़ी के पीछे खड़े शेर पर पड़ा। शेर ने सोचा यह चलता-फिरता उजाला ही तो कहीं टपका नहीं। आदमी को लगा यह कमबख्त बछेरा मुझे छकाते हुए यहाँ छिपकर खड़ा हो गया है। उसने चतुराई से टॉर्च बन्द की। अँधेरे में ही धीरे-धीरे आगे बढ़ा और कूदकर शेर पर चढ़ बैठा।

शेर पर आज तक जंगल के पेड़ों की किसी डाल ने भी ऐसे लदने की हिम्मत न की थी। इतना भारी वज़न पहली बार उस पर लदा था। वह दहाड़ने की बजाय भोंकारते हुए भागा, “आ गया रे। मार डाला रे। टपका आ गया रे।” आदमी उसे काबू में करते हुए कहने लगा, “मार क्या डाला बे। मारुँगा तो तुझे मैं अब। बहुत घुमाया तूने मुझे। पैदा होते ही घर से बाहर निकल गया कमबख्त।”

यह सुनकर तो शेर की जान ही निकल गई। उसे यह समझ में आया कि उस पर दो टपके सवार हैं। एक तो यह जो उस पर लदा हुआ है। दूसरा वह जिसके बारे में यह बात कर रहा है कि पैदा होते ही घर से भाग निकला उत्पाती टपका। तभी उस आदमी ने शेर को रस्सी से पीटना शुरू कर दिया। बोला, "तू मुझे यह बता कि पैदा होते ही तू भागा क्यों?" शेर कुलाँचे भर-भर के भागने लगा। वह पूरी ताकत लगाकर भागता और सोचता कि आज जान नहीं बचने वाली। उधर उस आदमी का रस्सियों से पीटना जारी था। शेर बेचारा लीद करता जाता और भागता जाता।

भागते-भागते दिन का झुटपुटा होने लगा। आदमी को जब दिखाई दिया कि वह किसी बछेरे पर नहीं शेर पर सवारी गाँठे हुए है तो उसकी हवा निकलने लगी। आऽऽआऽऽऽ ऊऽऽऊऽऽऽ। वह चीखने-चिल्लाने लगा। शेर को समझ में नहीं आया कि इन टपका बाप-बेटों को हो क्या गया है। क्या यह उनका कोई और रौद्र रूप था? आदमी रोने लगा, "बचाओ रे! अब जीवन में कभी घोड़े के अण्डे नहीं खरीदूँगा। कोई कारोबार नहीं करूँगा।" तभी नीचे को झूलती हुई एक बरगद की डाल उसकी पकड़ में आ गई। वह वहीं लटक गया। शेर एकदम से हल्का हो गया। पर वह भागता ही रहा।

इधर शेर पर सवारी करने से बुरी तरह घबराया हुआ, पसीना-पसीना आदमी बरगद के विशाल पेड़ पर चढ़ गया और पेड़ में बने एक बड़े-से खोखल में छिपकर बैठ गया।

बड़े सवेरे शेर को इस तरह हाँफते-भागते देखकर एक बन्दर ने उसे रोका, "क्या बात है शेर मामा, इस तरह घबराए हुए क्यों हो?"

"अरे भाई जान बचानी है तो मेरे साथ-साथ भागो। टपका आ रहा है?"

"टपका आ रहा है? क्या मतलब? टपका क्या होता है, हुँह?"

"अरे मेरे बाप, होता है। बहुत भयानक होता है। पीठ पर लद जाता है और रस्सियों से मारता है। इतना खींचकर मारता है कि जान निकल जाए।"

"शान्त शान्त। शेर मामा बिलकुल शान्त। जंगल में आप से बढ़कर कोई जानवर नहीं है। टपका जैसी कोई चीज़ नहीं है। आपको गफलत हो गई है। गलतफहमी में आप डर गए हैं।" बन्दर ने कहा।

"क्या हुआ? मामला तो बताओ?" ऐसा कहते हुए एक लोमड़ी भी वहाँ आ गई।

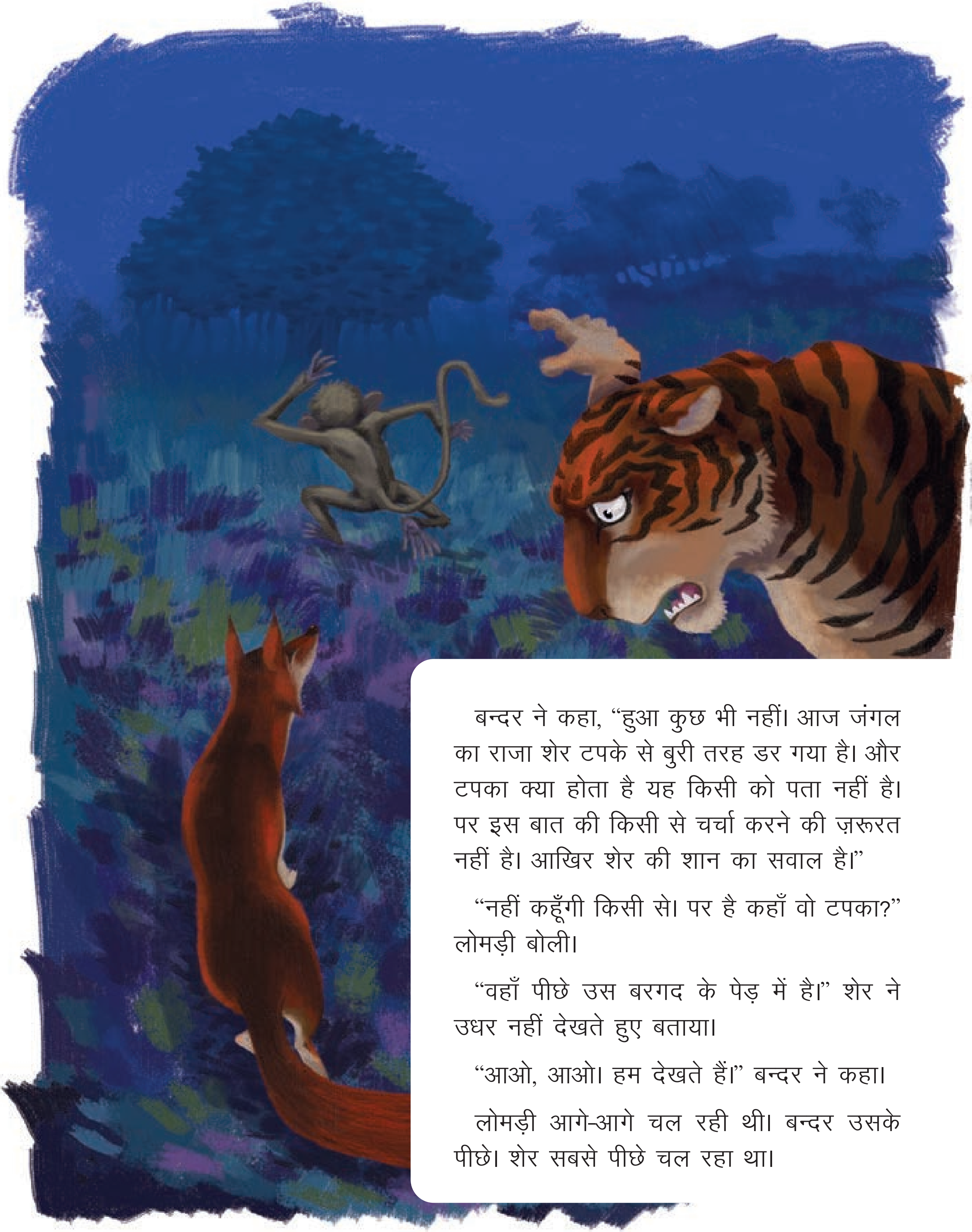

बन्दर ने कहा, “हुआ कुछ भी नहीं। आज जंगल का राजा शेर टपके से बुरी तरह डर गया है। और टपका क्या होता है यह किसी को पता नहीं है। पर इस बात की किसी से चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है। आखिर शेर की शान का सवाल है।”

“नहीं कहूँगी किसी से। पर है कहाँ वो टपका?” लोमड़ी बोली।

“वहाँ पीछे उस बरगद के पेड़ में है।” शेर ने उधर नहीं देखते हुए बताया।

“आओ, आओ। हम देखते हैं।” बन्दर ने कहा।

लोमड़ी आगे-आगे चल रही थी। बन्दर उसके पीछे। शेर सबसे पीछे चल रहा था।

बन्दर उछलते-लपकते हुए पेड़ पर चढ़ गया। लोमड़ी भी। शेर आँखें झुकाए नीचे खड़ा रहा। बन्दर ने हरेक डाल पर कूदते हुए कहा, "कहीं कुछ भी नहीं है।" लोमड़ी भी पत्ते-पत्ते में झाँककर कह रही थी, "कांअ टपका? कांअ टपका?" ऐसा कहते हुए वह उस खोखल की ओर पीठ करके बैठ गई जिसमें आदमी बैठा था। उसकी पूँछ खोखल के भीतर चली गई। आदमी ने देखा कि यह क्या आ गया है! उसने डर के मारे ज़ोर से भींचकर लोमड़ी की पूँछ को पकड़ लिया। लोमड़ी चीखते हुए उछली, "पकड़ लिया रे! टपके ने पकड़ लिया।" वह नीचे खड़े शेर के ऊपर जाकर गिरी।

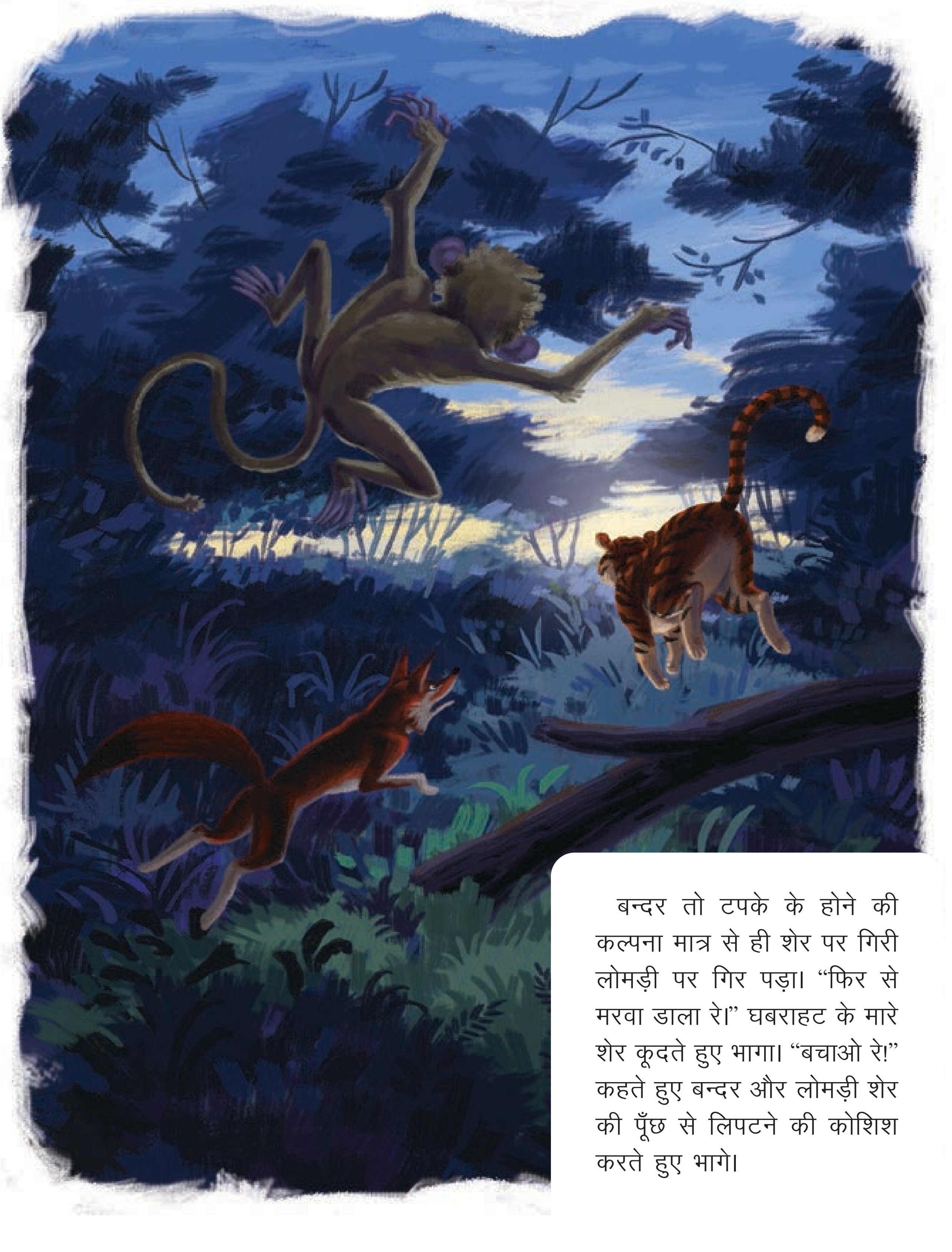

बन्दर तो टपके के होने की कल्पना मात्र से ही शेर पर गिरी लोमड़ी पर गिर पड़ा। “फिर से मरवा डाला रे।” घबराहट के मारे शेर कूदते हुए भागा। “बचाओ रे!” कहते हुए बन्दर और लोमड़ी शेर की पूँछ से लिपटने की कोशिश करते हुए भागे।

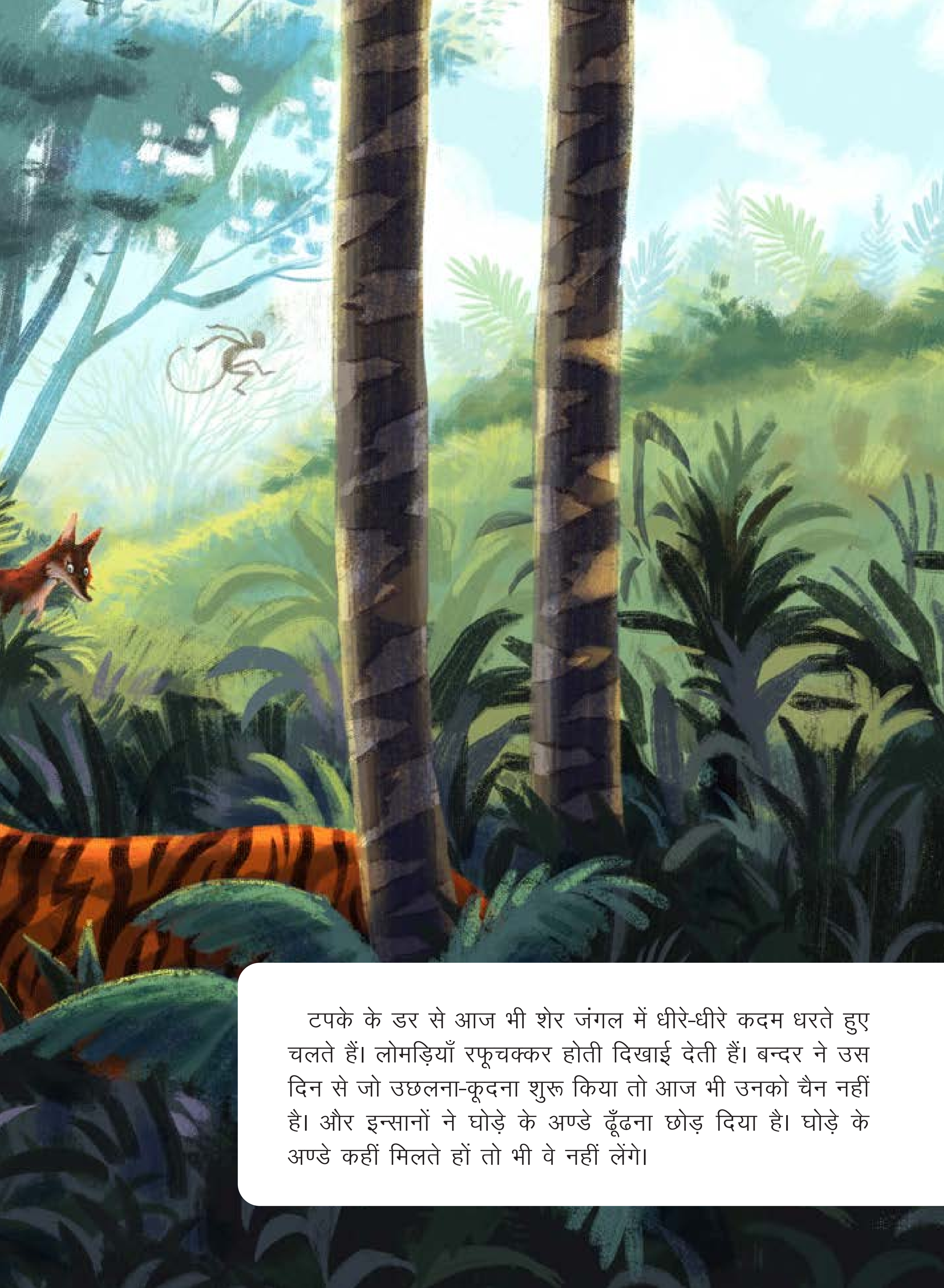

टपके के डर से आज भी शेर जंगल में धीरे-धीरे कदम धरते हुए चलते हैं। लोमड़ियाँ रफूचक्कर होती दिखाई देती हैं। बन्दर ने उस दिन से जो उछलना-कूदना शुरू किया तो आज भी उनको चैन नहीं है। और इन्सानों ने घोड़े के अण्डे ढूँढना छोड़ दिया है। घोड़े के अण्डे कहीं मिलते हों तो भी वे नहीं लेंगे।

अण्डे से निकला बछेरा तो झोंपड़ी से टपका

ANDE SE NIKLA BACHHERA TO JHONPADI SE TAPKA

पुनर्लेखन: प्रभात
चित्र: मयूख घोष
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: दीपाली शुक्ला व भरत त्रिपाठी

कहानी: प्रभात, अगस्त 2019
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

© चित्र: मयूख घोष, अगस्त 2019

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: अगस्त 2019 / 2000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2021 / 3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: अक्तूबर 2023 / 3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: जून 2026 / 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैट आर्ट पेपर व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-85236-98-3
मूल्य: ₹ 60.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72-73 www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

प्रभात

राजस्थान के करौली ज़िले के रायसना में जन्म। शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य। बच्चों के लिए गीत, कहानी, कविता, नाटक की बीस से अधिक किताबें प्रकाशित। युवा कविता समय सम्मान सन् 2012 और सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार सन् 2010।

मयूख घोष

कोलकाता में रहने वाले मयूख घोष को यात्रा करने का शौक है। इस दौरान उनकी स्केच बुक हमेशा साथ होती है। आपने महाराजा सायाजी राव यूनिवर्सिटी से विज़ुअल आर्ट्स में स्नातक। रियाज़ एकेडमी, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स किया है। रूम टू रीड, एनसीईआरटी, कराडी टेल्स और मनन बुक्स जैसे प्रकाशकों के साथ काम कर रहे हैं।

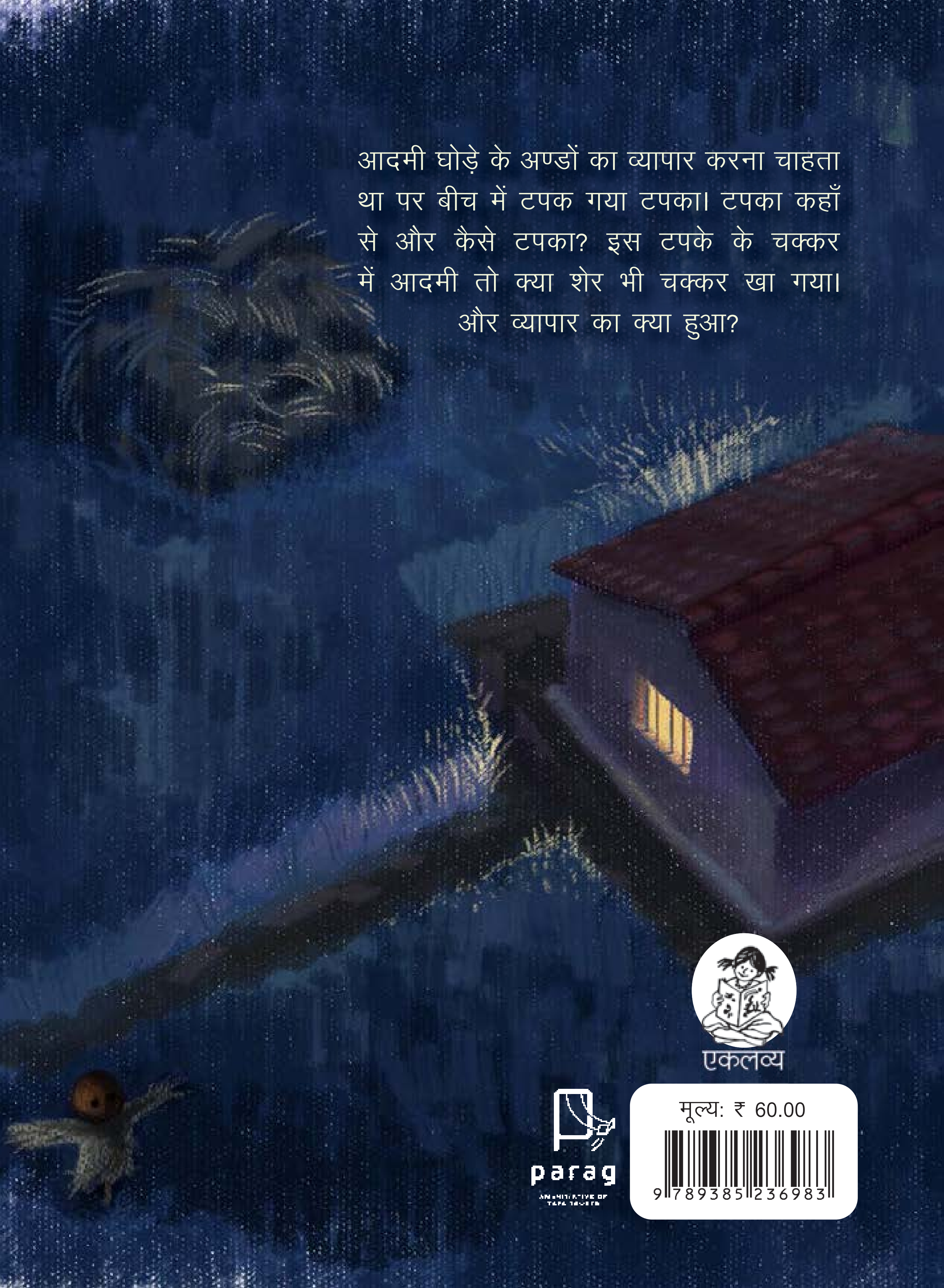

आदमी घोड़े के अण्डों का व्यापार करना चाहता था पर बीच में टपक गया टपका। टपका कहाँ से और कैसे टपका? इस टपके के चक्कर में आदमी तो क्या शेर भी चक्कर खा गया। और व्यापार का क्या हुआ?

एकलव्य

parag

मूल्य: ₹ 60.00

9789385236983